Research Paper
Peer Reviewed Journal

ISSN-2455-0736 (Print)
ISSN-2456-4052 (Online)

समकालीन कहानियों में यौन शोषण के खिलाफ नारी का संघर्ष

Dr. Joyice Tom

Assistant Professor, Pavanatma College, Murickassery
tomjjunior@gmail.com

Abstract

यौन शोषण एक अहम मुद्दा है। नारी शरीर की प्राकृतिक दुर्बलता, माँसलता एवं गोलाइयाँ उसे पुरुष की हवस की शिकार बना देती है। कभी-कभार मौजूदा सामाजिक व्यवस्था एवं मूल्य की परिकल्पना भी औरत के खिलाफ गवाही देती है। मुख्तार माई, फूलन देवी जैसों पर हुए सामूहिक बलात्कार समूचे मानव सभ्यता की पोल खोलती है। इस तरह की लाखों घटनाएँ अब भी परदे के भीतर कहीं गुम है। बनिस्बत नारी के जीवन वाकई असुरक्षित साबित होती है। इस मोड पर अपनी हिफाज़त नारी स्वयं करने लगी हैं। अस्सियोत्तर कहानियाँ इसके कई मिसाल प्रस्तुत करती हैं। संजीव की 'जसी-बहू' कहानी में लुच्चे-लफंगों की बुरी नज़रों से अपने आप को बचाने में एक पति-परित्यक्ता अपनी सारी होशियारी जुटाती है। गाँव के गिद्धों की पैनी नज़रों से बचने केलिये जसी-बहू दो चीज़ों को छिपाने की भरपूर चेष्टा करती रहती है – एक अपना यौवन और दूसरा परदेसी बालम के आने की खबर। उसका पति शहर में पैसा कमाने गया है और अब लौटने का नाम भी नहीं लेता है। खेती बहु संभालती है मगर बिना मरद के , भय्या-बाबा कह कर गाँववालों से काम कराना मुश्किल है। गाँव के ठाकुर-ठकार ही नहीं अदने आदमी के चेहरे की उथलती गन्दगी को मजबूर होकर झेलती रहती है। एक बार सितई पण्डित उसके कमरे तक घुस आया। तब वह चीखती-चिल्लाकर चूँ मचाती गाँववालों को इकट्ठा कर किसी न किसी तरह बच गयी। लेकिन आम के मौसम में चोरी छिपे बागान से आम चुराते हुए वह पकडी जाती है और सितई पण्डित उसे अपनी आदिम क्षुधा का शिकार बना देता है। वह शहर जानेवाले मज़दूरों को चिरौरी-विनती कर जसी के पास खबर भेजती है। लेकिन वह नहीं लौटता। आखिर बहू के पेट में सितई पण्डित का 'कोढ' फोडते ही जसी लौटता है। खबर जानकर वह उलटे बहु को मारता है और अपने लिये दूसरी औरत ले आता है। बहू पूरे समाज के कीचट को ढोये बच्ची की ऊँगली पकडकर जसी का घर छोडती है। समाज ने भला उसे हराया हो, वह हार नहीं मानती। शिवमूर्ति की तिरिया चरित्तर कहानी की विमली का चरित्र भी जसी-बहू से मिलती है। विमली गाँव की ऐसी पहली औरत थी जिसने ईण्ट के भट्टे में मज़दूरी करने का ठोस कदम उठाया था। वह नवीं उम्र से लेकर अपनी कमाई से माँ-बाप को संभाल रही थी। वह बाल-ब्याही है और उसका पति पैसा कमाने शहर गया हुआ है और उसका कोई अता-पत नहीं है। ससुरजी उसकी गौना कर ससुराल ले आता है। वह विधुर है और घर में अकेला भी। ससुरवाँ का चरित्र ऐसा है जानो लंबा टीका मधुरी बानी, दगे बाज़ की यही निशानी। घर आते ही ससुर की तेवर बदलती है अतः वह बहू को बीवी बनाना चाहता है। पर विमली तो शेरनी है ही, उसके सामने वह जर्जर बुढा कहाँ कामयाब होता है। आखिर मन्दिर के प्रसाद में अफीम मिलाकर वह विमली को पिलाता है और उसकी बेहोशी में उसकी इज्जत लूट लेता है। विमली को जब होश आती है वह ससुर को जलाने की सोचती है। मगर वह जलील कहाँ मौजूद था, वह मन्दिर में जाकर छिप गया था। इसलिये विमली अपने पती को ढूँढने निकल पडती है। इस दौरान गाँव में अफवाह ऐसी फैलती है जानो विमली अपने यार के साथ भाग गयी है। अफवाह के पीछे भी उस सडे-संडास ससुर का ही हाथ था। पंचायत जुडती है और एकतरफा फैसला ली जाती है कि आरोप सच है और विमली दोषी है। और ऐसी गलतियों की सज़ा है- दगनी जिसे दागने का अधिकार दरिन्दे ससुरवाँ को ही दिया जाता है। पंचायत के इस अन्धे कानून को विमली हल्ला बोलती है –" मुझे पंचों का फैसला मंज़ूर नहीं। पंच अन्धा है, पंच बहरा है, पंच में भगवान का सत नहीं है। मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ। देखूँ कौन माई का लाल दगनी दागता है" । हालांकि घायल शेरनी की आखिर दगनी होती ही है। एक दगेबाज़ का

ISSN-2455-0736 (Print)
ISSN-2456-4052 (Online)

पाखण्ड वाकई जीत जाता है । उसकी तो लाठी भी न टूटी साँप भी मारा गया । और विमली की तो, समाज की हवसनीति और अन्धा कानून उसे हराती है मगर आशा है कि वह मन से न हारी है ।

"इस घर का तो रिवाज़ ही है । औरत सिर्फ इस्तेमाल की चीज़ है । इस घर में रिश्तों की मर्यादा का कोई मतलब नहीं है बहू । ज़िन्दगी सुख चैन से काटनी है तो समझौता कर लो " ओम प्रकाश वात्मीकि की 'जिनावर' कहानी में एक सास अपनी बहू को इस तरह समझाती है । समझाने की वजह है-उसके पति की असीम यौनाकांक्षा, जिसके सम्मुख न बेटी है न बहू । लेकिन बहू उसे हर्गिज़ नहीं मानती । वह उस घर में निबाहना नहीं चाहती । वैसे भी यौन शोषण के कई मुकाम उसके बदन के नज़दीक से गुज़र चुके हैं, पर वह कतई किसी को छूने तक का मोहलत दिया था । बचपन में उसके मामा को उसकी जिस्म की नशा चढी थी । मामा के खिलाफ उसकी माँ भी चूँ न कर सकती थी इसलिये कि उनका जीवन मामा की दया पर निर्भर था । मगर वह नही मान सकती थी । जब कभी मामा को वह अपने नज़दीक पाती, चिल्ला-चिल्लाकर मामा को जलील कर देती थी । माँ एवं सास की समझदार चुप्पी से ज्यदा बहू की इनकार भरी चीख असरदार साबित होती है । ऋता शुक्ला की 'छुटकारा' कहानी की कमली भी चुप्पी के खिलाफ खडी होती है । वसंतू मिसिर का हाथ जब उसकी इज्जत पर पडता है, वह बेहिचक थाने में बयान लिखाती है । हार मानने पर मिसिर के सामने वह सीधा शादी का प्रस्ताव तानती है । " क्यों मिसिर जी बिना माई –बापू की लडकी के साथ ज़बर्दस्ती करने कौन आया था, तुम्हीं ना ? अब तो सारे गाँवों में बदनामी फैली है कि कमली को मिसिर ने .....सच्चे बडमन के पूत हो तो हिम्मत रखो कि अपनी बिरादरी के सामने हमारा हाथ पकडकर अपने घर में बैठालो ।" आखिर जातिगत हीनता के परे बसंतू मिसिर को हार मानना पडता है । कमली के सामाजिक न्याय का संघर्ष सार्थक होता है । कुछ कहानियाँ ऐसी भी है, जिनमें ज़ख्मी नारी अस्मिता का आक्रामक रवैया भी दर्शाया गया है । चित्रा मुदगल की 'गिल्टी रोज़ेज़' कहानी की दुखना अपने सौतेले संतान के पेट में वाकई छुरा भोंक देती है । न भोंकती तो उस जल्लाद से अपनी लाज-लज्जा नहीं बचा सकती थी । उसने तो रिश्तों की सरहद को ही पार कर दिया था । मन्मथलीला में उसके सम्मुख क्या महतारी क्या बहना । एक बार बेटे की दानवीयता को नादान बच्चे का भूल समझकर वह माफ करती है । जब कोई भूल दोहराता है तो, उसे भूल नहीं कहा जाता, अनदेखा भी नहीं किया जाता । आखिर वह छुरा भोंकने में मजबूर होती है । वह बाहर के जहन्नुम की तुलना में सलाखों की पीछे की सुरक्षा अपना लेती है । इसलिए 'जेहल' नहीं छोडना चाहती है – "जेहल नहीं छोडना चाहते हम....असली जेहल छोड आये हैं ।"

कुसुम वियोगी की अंतिम बयान कहानी की 'अतरो' खेत में मुखिया के इकलौते संतान राजेन्द्र के 'पुरुषत्व' को ही काट लेती है ।राजेन्द्र उसकी इज्जत पर हाट लगाना चाह रहा था । राजेन्द्र की कीचड से गुज़रने से ज्यादा सलाखों की सुरक्षा अतरो को महत्तर लगती है । पुलिस सामने सधैर्य वह राजेन्द्र का कटा हुआ पुरुषत्व फेंकती है । कुसुम मेघवाल की 'अंगारा' कहानी की जमना भी वही रास्ता अपना लेती है । वह भी अपने बलात्कारी के 'पुरुषत्व के प्रतीक अंग'को ही काट गिराती है ।

मनोष राय की 'शिलान्यास' कहानी में एक परित्य्क्ता, माँ अपने बेटे से उसके पिता की कत्ल का वादा लेती है, जो विश्वासघाती है । उस आदिवासी औरत का पति एक जाने माने न्यायाधीश है । लेकिन उसके साथ हुई शादी जिस्म की हवस बुझाने के लिये रचा गया एक नाटक मात्र था ।पहली रात में ही पत्नी का पाँव भारी करके वब गायब हो गया था । बरसों वह औरत इस उम्मीद में पति का पथ निहारती रही कि आज नहीं तो कल वह लौट आयेगा ही । मगर उसकी प्रतीक्षा बेमोल सिद्ध हुई थी । लंबे अठारह सालों के इंतज़ार के बाद कहीं से पता लगाकर अपने बेटे के साथ पति से मिलने गयी तो उसे देखते ही वह न्याय की देवता उसे राण्ट ठहराता है और पुलिस से पिटवाकर हवालात में कर देता है । जेल में मरने से पहले वह औरत जी-जान से अपने पति की मौत चाहने लगती है और बेटे से

ISSN-2455-0736 (Print)
ISSN-2456-4052 (Online)

वादा लेकर मरती है कि वह पिता के खून का तिलक लगाएगा। पेशेवर यौनवृत्ति में लगी औरतों की कहानियाँ भी अनेक है। जीवन के किसी नाज़ुक मोड पर पुरुष की मौकापरस्ती एवं विश्वासघात के सामने स्वयं झीजने का निर्णय लेती औरतों की कहानियाँ निराली है। गोविंद मिश्र की 'खुद के खिलाफ' की विमला एक सच्चाई अंकित करती है- "अगर औरत उस आदमी के साथ सो सकती है, जिसे वह चाहती नहीं, सिर्फ इसलिए कि वह उसका पति कहलाता है....तो वह किसी के भी साथ सो सकती है ....." वह किसी से प्यार करती थी मगर शादी किसी गैर से करनी पडी। जब पति की नौकरी छुटी तो कर्ज बढ गया और कर्ज उतारने के लिये पति के किसी मित्र के साथ बिस्तर बांटना पडा। धीरे धीरे यह रोज़ का चाकर बन गया और बेशरम पति ने उसे पेशेवर बना दिया। वह अपनी बीवी के जिस्म की कमाई पर खाता-पीता है। वह औरत बिलकुल जानती है कि पुरुषवादी समाज में उसके पास हर रोज़ जो मूँह मारने आते है, वे मेहबूबा भी रख सकते हैं और पत्नी भी पाल सकते हैं। उन सबके पास मन है और वहीं एक चीज़ है जिसे विमला ने कहीं खो दिया है। वह ग्राहको के सामने एक मुर्दा बदन परोसकर खुद के खिलाफ लड रही है।

संतोष श्रीवास्तव की 'यहाँ सपने बिकते हैं' कहानी में एक विद्रोही नारी, पुरुष की मदनाकांक्षा, महत्वाकांक्षा को ललकारते हुए स्वयं वेश्यावृत्ति अपनाती है। बचपन में उसकी भाई ने ही सर्वप्रथम उसको विदेह किया था। जवानी में उसका पति, जिसके साथ दरअसल प्रेम विवाह हुआ था, अपनी 'एक्टर' बनने की उत्कर्षेच्छा की खातिर उसके जिस्म को एक सिनेमा निर्माता को परोसता है। पति वाकई रिश्ता नहीं छोडता मानो कोई सहज बात घटित हो। पति अथच उससे प्यार जताता है। लेकिन वह औरत प्यार एवं समझौते का फरक समझ सकती है। इसलिये बच्चा जनने से पहले वह पति की दुनिया से अलग होती है-"रोहित क्या तुम पसन्द करोगे कि हमारे बच्चों पर लोग ऊँगलियाँ उठायें कि उसकी माँ चरित्रहीन है ....उनके पिता मात्र एक दलाल....जो अपनी महत्वाकांक्षा की खातिर पत्नी का सौदा करते हैं।" उसके प्रश्न के सामने पति निरुत्तर खडा है। वह पेशा और पति की तुलना में वेश्यावृत्ति को ही चुनती है, इसलिये कि आखिर बेइज्जती की ज़िन्दगी ही जीनी है तो क्यों न खुलकर एक विद्रोह बनकर जिये-"जब जलालत से भरी ज़िन्दगी ही जीनी है तो क्यों न खुलकर स्वतंत्र बनकर जिऊँ....चुनौती बनकर जिऊँ।पुरुष की बर्बरता के खिलाफ एक आन्दोलन बनकर जिऊँ....देखना चाहती हूँ कि पुरुष में आखिर कितना भूख है ? कब थकेगा वह, कब तृप्त होगा ? इस आदिम भूख को अगर एक अंश भी मिटा पायी तो अपनी साधना को पूर्ण मानूँगी।" वेश्यावृत्ति उसके लिये साधना है, पुरुष की कामपिपासा के सम्मुख एक निराली साधना।

'पैसे की दुनिया में बडी अहमियत है, सब उसी को पूछते हैं ....तो कमा लिये जाये जब तक आते हैं'। खुद के खिलाफ कहानी की विमला की यही राय है, जो वाकई सच साबित होती है। जहाँ पैसे का इतना मान दिया जाता है कि यह नहीं देखा जाता है कि पैसे का श्रोत आखिर क्या है। यह नहीं देखा जाता है कि पैसा किसी असामजिक या अनैतिक प्रक्रिया से उपजा हुआ तो नहीं, कोई कालाधन वगैरह तो नहीं। ऐसे माहौल में कोई माँ बेचकर या बिटिया को बाँटकर या किसी का गला काटकर भी अगर पैसे कमाये तो उसे कहाँ तक दोषी मान सकता है। मगर इस वास्तविकता को कोई कैसे स्वीकार सकता है। चित्रा मुदगल की 'गिल्टी रोज़ेज़' कहानी में एक पिता इस तरह पैसे का मंत्र सदा जपनेवाला है। पैसे के लालच में वह अपनी नन्हीं लडकियों को 'कॉलगेल' बना देता है। उनके मासूम बदन की गर्मी में मुर्गी पकाता है, दारू पीता है, मौज-मस्ती करता है। पति की नृशंसता से अपनी नन्हीं लडकियों को बचाने के लिये माँ को बस एक ही उपाय सूझती है जो वाकई जुनून है कि बच्चियों को ज़िन्दा जला देना और स्वयं उस आग में जलना – "आज उस दुस्साहसी ने बडी बेटी की देह की कमाई खाई है। मूँह में खून लग गया .....छोटी बेटियाँ बच जायेंगी क्या ? एक उपाय है नरक से हमेशा केलिए मुक्ति पाने का। दो दिन पहले ही वह राशन कार्ड पर मिट्टी का तेल छुटाकर लाई है। पीपा भरा रखा है। शतरजी पर पडी सो रही लडकियों पर इसे उंडेले माचिस की तीली दिखा दें ? और पीपे के शेष तेल को अपने ऊपर उण्डेलकर खतम करे कहानी।" वह ऐसा ही करती है, लेकिन ज़रा चूक हुई कि वह शेष रह गयी, दर्द में गल- गल कर लंबी मौत मरने केलिये। गिल्टी रोज़ेज़ की गुना बाई की तुलना

ISSN-2455-0736 (Print)
ISSN-2456-4052 (Online)

में 'जब तक बिमलाएँ' की बिमला थोडा भिन्न है। उसका 'मरदराम, बडा नालायक है, जो रिक्षा चलाता है। वह जो कुछ कमाता है, उसे दारू में उडाये यों ही हाथ लटकाये घर लौटता है। ऊपर से बडा अभिमानी भी। एक दिन पाखाने गयी बिमला की नन्ही छोरी का बलात्कर होता है। पूरी बस्ति पुलिस थाने में रिपॉर्ट लिखाने के खिलाफ है, मगर वह थाने में रिपॉर्ट लिखाती है और अस्पताल में अपनी बेटी का इलाज कराती है। इस पर उसका नालायक पति बिगडता है। उसका कहना है कि ऐसी मामूली बातों में बिमला का थाने चली जाना उसे बिरादरी में मूँह दिखाने लायक नही छोडा है। इतना बावला मचाने की ज़रूरत ही नहीं थी। बलात्कर तो जनानियों के लिये कोई बडी बात तो नहीं ठहरी। उस नालायक का हृदय इस कदर अचेत है कि उसे अपनी बेटी केवल जनानी दिखती है। उसकी इज्जत लूट ली गयी है। वह उल्लू का पट्ठा इज्जत की क्या जानता है। लेकिन विमला जानती है। वह उस बलात्कारी को कानून के सामने सज़ा दिलाकर समूचे नारी समाज का मान रखती है। उसका पति चाहे कोर्ट-कचहरी से डरे, बिमला अकेली काफी है, इज्जत की लडाई लडने केलिये।

शिवमूर्ति की 'कसाई बाडा'कहानी की शनीचरी देवी अपनी बेटी को लौटाने की खातिर गान्धीमार्ग को अपना लेती है। गाँव में हुए सामूहिक विवाह के दौरान उसकी बेटी की भी शादी हुई थी। लेकिन वह सामूहिक-आदर्श-विवाह लडकियों को व्यभिचार के धन्धे में लगाने के लिये गाँव के प्रधान द्वारा रचा गया झूढा नाटक था। शनीचरी देवी के सामने जब पोल खुलती है, वह प्रधान के घर के सामने आमरण अनशन ले बैठती है। पूरा का पूरा गाँव तमाशा देखता रहता है, मगर शनीचरी देवी का संघर्ष सत्य के मार्ग पर है। लेकिन के अंत में उसकी निर्मम हत्या होती है। पर शिवमूर्ति की ही कहानी 'अकाल दण्ड' अलग संवेदना प्रदान करती है। कहानी की सूरज कली अपने बदन पर हाथ लगाये 'सेकरेटरी बाबू' के दांत तोड देती है। यों समकालीन कहानियों में चित्रित नारी की दशा जो यौन शोषण के खिलाफ संघर्षरत है, काफी दर्दनाक है। अपनी लाखों कोशिशों के ज़रिये इस नृशंसता से उबरने केलिये वे संघर्षरत है। हालांकि पुरुषमेधा समाज की नज़रिये में अब भी बदलाव आना बाकी है। कदाचित संजीव ने इस उद्देश्य से अपनी 'वापसी' कहानी में यों लिखा है-" औरत तो धरती है टोणी। धरती लाख चाहे कि कोई अवांछित बीज अपनी कोख से अंगुराये, मगर उसका वश चल पाता क्या ? क्या वह उसकी महानता नहीं कि ज़हर को भी अपने खून से सींचकर अमृत बनाकर हमें सौंप देती है। ऊँगली पकडकर आदमखोरों से बचाकर हमें आगे ले जाती है, मौत की घाटियों के पार, और हम है कि अपनी तमाम नाकामियों का शिकार उलटे उसी को बनाते हैं।" संजीव का यह विलोकन सौ फीसदी सच है। पुरुष की बर्बरता के सामने नारी अपनी ममत्व को कायम रखने केलिये संघर्षरत है। इस होड में कहीं वह समझौता करने में मजबूर होती है। कभी व्यवस्था से हार मानती है। कभी पूरे पुरुषवर्चस्विता को ललकरती अपनी रची राह में आगे चली जाती है तो कभी असहमती के किसी भीषण मोड पर पुरुषत्व को ही काट गिराती है या कभी अपने ही नवेलियों को जलाकर सलाखों के पीछे स्त्रीत्व को सुरक्षित करती है। फिल्हाल यौन शोषण के खिलाफ नारी का संघर्ष जारी है।

BIBLIOGRAPHY

1. Thiriya Charithar,Shivmoorthy,Keshar Kasthuri,Page 143
2. Ginavar,Om Prakash Vathmiki,Salam,Page 99
3. Chutkara,Rtha Shukla,Gramya Jeevan Ki Kahaniyam,Editor Giriraj Sharan,Page 35
4. Guilty Roses,Chithra Mudgal,Aadi Anadi,Page 258
5. Khud Ke Khilaf,Govind Misra,Das Prathinidhi Kahaniyam,Page 38
6. Yaham Sapane Bikathe He,Santhosh Srivasthav,Vasudha 59-60,Page 402
7. Vahi, Page 404